नीरजा माधव जी की पुस्तक 'किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य)' का समीक्षात्मक अध्ययन :-

पुस्तक- किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय(कुछ तथ्य, कुछ सत्य)
लेखिका- नीरजा माधव
प्रकाशक- ए. बी.एस. पब्लिकेशन आशापुर,सारनाथ ,वाराणसी (उत्तर-प्रदेश)
प्रथम संस्करण-2019
मूल्य- 225/-

लेखिका नीरजा माधव जी अपनी पैनी नज़र से समाज की हर पहलू को साहित्य का विषय बना।उसे बहुजनों के बीच रखने में काफ़ी उत्सुक नज़र आती हैं। लेखिका कहानी ,कविता ,उपन्यास, ललित निबंध आदि के माध्यम से हिन्दी साहित्य जगत की सेवा करती रहीं हैं।उन्होंने सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य के माध्यम से समाज की एक अनछुए पहलू 'तृतीय समुदाय'को अपनी उपन्यास 'यमदीप' का विषय बनाया।जो काबिले तारीफ है।समाज से उपेक्षित इस वर्ग की पीड़ा को अपनी साहित्य के माध्यम से सर्वसमाज को परिचित करा एक नये विमर्श को जन्म दिया।

लेखिका अपनी पुस्तक 'किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय(कुछ तथ्य ,कुछ सत्य)' के माध्यम से इसके पहले अध्याय में यह स्पष्ट करने का प्रयास की हैं कि किन्नर शब्द हिजड़ा का पर्याय नहीं है।अपितु किन्नर दूसरे अर्थ का द्योतक है और हिजड़ा किसी दूसरे अर्थ का।इसे प्रमाणित करने के लिए up बोर्ड की पाठ्यपुस्तक से कविता की पंक्तियां रखती हैं -

"यदि होता किन्नर नरेश मैं

राजमहल में रहता

सोने का सिंहासन होता

सिर पर मुकुट चमकता।

बंदी जन गुण गाते रहते

दरवाजे पर मेरे

निस दिन नौबत बजती रहती

संध्या और सवेरे।"

वे यही नहीं रूकती हैं और साक्ष्य संग्रहित करती हुई दिखाती हैं कि नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर में "किन्नर "शब्द का अर्थ लिखा है –

(1)एक प्रकार के देवयोनि में माने जाने वाले प्राणी जिनका मुख घोड़े के समान होता है ।

(2) गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति।

लेखिका का मूल विचार रहा है कि लैंगिक विकलांगता के लिए हिजड़ा शब्द ही उपयुक्त है इसके संदर्भ में वे लिखतीं हैं कि – 'किन्नरी' शब्द का अर्थ किन्नर जाति की स्त्री और दूसरा अर्थ एक प्रकार का तंबूरा या सारंगी है।वहीं रविंद्र प्रेस ,मदरसा रोड ,कश्मीरी गेट ,दिल्ली से सन 1990 में प्रकाशित 'शिक्षक हिंदी शब्दकोश' में भी "किन्नर" शब्द के दो अर्थ दिए गये हैं –

1–स्वर्ग के गायक

2– गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति। इसी शब्दकोश में " हिजड़ा" शब्द के भी दो अर्थ दिए गये हैं –

a– ऐसा व्यक्ति जिसमें प्राकृतिक रूप से स्त्री और पुरुष दोनों के कुछ कुछ लक्षण पाए जाएं

b– b– नपुंसक।

उसी तरह "हिजड़ा" शब्द के बहुत करीब दो शब्दों ने मुझे और भी आश्वस्त किया।एक शब्द था 'हिजरत', जिसका एक अर्थ होता है संकट के समय जन्मभूमि त्यागना,देश त्याग और दूसरा शब्द है 'हिजर' जिसका अर्थ है जुदाई या वियोग।विवशता में अपनी जन्मभूमि, मातृभूमि या परिवार से वियोग इन हिजड़ों की नियति होती है, इसीलिए हिजड़ा शब्द ही इनकी दुर्दशा और विचारणीय स्थिति का सटीक घोतक है ।लेखिका हिजड़ा और किन्नर दोनों में शाब्दिक अन्तर को स्पष्ट

कर पाठकों को अपनें विचारों से संतुष्ट करने का कोई कोर–कसर नहीं छोड़ना चाहतीं।

यह सत्य है कि किन्नर क्षेत्र के स्त्री –पुरूष संगीत और नृत्य में विशेष रुचि रखते हैं।युवा अवस्था तक प्रायः प्रत्येक किन्नरी नृत्य और गीत में पारंगत जो जाती है।यहाँ किसी गीत को कला की दुहाई देते हुए प्रचारित या संचारित नहीं किया जाता।किन्नर गीतों में छन्द प्रायः छोटे होते हैं।और गायक को ह्रस्व दीर्घ प्लुत करने की पूरी स्वतंत्रता होती है जैसे कि हम भोजपुरी आदि जनगीतों में पातें हैं।

वहीं राहुल सांस्कृत्यायन लिखतें हैं कि – "किन्नर कंठ मधुर हैं, किन्नर गीत मधुर है,साथ ही वह अत्यंत सरल और अकृत्रिम है।उसमें कोई उस्तादी कलाबाजारी नहीं है।" पर लेखिका लिखती हैं कि इन सब से ठीक उलट लक्षण और विशेषताएं हम पाते हैं हिजड़ा समुदाय में।उनका स्वर कर्कश होता है।भोंडे स्वर में कुछ भी गाते हैं।और साथ ही जहाँ एक ओर हिजड़ा प्राकृतिक रूप से शारिरिक विकृति के कारण समाज से उपेक्षित है तो किन्नर प्रकृति की गोद में रहते हुए जीवन –यापन की तमाम असुविधाएं झेलते हुए भी स्वस्थ,सुन्दर और स्वाभाविक मनुष्य हैं।हिजड़ा और किन्नर में न कोई प्राकृतिक साम्य है,न भौगोलिक और न ही साहित्यिक।राहुल अपनी पुस्तक 'किन्नर देश में' लिखते हैं–"किन्नर देवताओं का देश है,अलंकारिक नहीं सीधी भाषा में।" पेज –59

अंततः लेखिका का मानना है कि यदि किन्नर का अर्थ हिजड़ा होता तो आज किन्नर (हिजड़ा) विमर्श के प्रथम प्रणेता राहुल जी होते।लेकिन ऐसा नहीं है।इस हिजड़ों के लिए किन्नर शब्द का प्रयोग इस इक्कीसवीं सदी की एक साहित्यिक भूल है। जैसे विकलांग को दिव्यांग कह देने मात्र से उस व्यक्ति की विकलांगता और उसमें उपजी त्रासदी दिव्य अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेती उसी प्रकार हिजड़ा समुदाय की त्रासदी सामाजिक,अस्वीकार्यता,मूलभूत मानवीय अधिकारों से दूरी जैसी समस्याएं किन्नर कह देने से सुन्दरता या समृद्धि में परिवर्तित नहीं हो सकती।

इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में लेखिका ने हिजड़ा कौन? पर ध्यान आकृष्ट करते हुए लिखती हैं कि हिजड़ा वही है जिनमें लैंगिक विकृति जन्मजात होती है ।तृतीय प्रकृति के लोगों की व्यथा को उद्घाटित किया जाए तो अपनी लैंगिक विकृति के कारण अपने ही परिवार और समाज द्वारा उपेक्षित हो जाते हैं।हम आप जैसे

सामान्य परिवारों ,जाति ,घर्म में पैदा होने के बावजूद भी लैंगिक विकृति (जो कहीं शारीरिक विकृति के समान ही है ।)के कारण उपहास व सामाजिक तिरस्कार के भय से ,एक अवस्था विशेष में हिजड़ा समुदाय के पास छोड़ दिया जाता या ये स्वयं उस समुदाय के बीच जीवन यापन करने को अभिशप्त हो जाते हैं।

लेखिका हिजड़ो की प्राकृतिक संरचना पर विशेष अध्ययन व खोज के पश्चात लिखती हैं कि लैंगिक विकृति के बच्चे बहुत कम पैदा होते हैं ,पर होते हैं।कुछ में लैंगिक विकृति ,तत्काल दिखाई पड़ती है परन्तु अधिकांश में किशोरावस्था में पूर्ण लक्षण देखने को मिलते हैं।तत्काल दिखाई पड़ने वाली विकृति में प्रायः बच्चे का जननांग अपुष्ट या अविकसित होता है। या स्त्री-पुरूष का मिला जुला अंग होता है।मेडिकल साइन्स की मदद से लेखिका सबसे महत्वपूर्ण बात कहती हैं कि हिजड़ो को हरमाफ्रोडाईटस (hermaphrodites) कहा जाता है ।ये दो प्रकार के होते हैं।

1-TRUE HERMAPHRODITES

2-PSEUDO HERMAPHRODITES

TRUE HERMAPHRODITES में असंतुलित गुणसूत्रों को ठीक कर पाना मुश्किल होता है।परन्तु PSEUDO HERMAPHRODITES वे बच्चे होते हैं जिनमें आंतरिक तौर पर एक सेक्स का जननांग रहता है और बाहरी तौर पर दूसरे सेक्स का जननांग होता है।इस अवस्था में यदि वाह्य जननांग पुरूष का हो और आंतरिक जननांग स्त्री का हो तो इसे सर्जरी द्वारा ठीक किया जा सकता है। लेखिका बलात बनाये गए हिजड़ो को हिजड़ा नहीं मानतीं।

लेखिका तृतीय प्रकृति समुदाय की सामाजिक व शैक्षिक स्थिति को प्रकाशित करती हैं।भारत के उच्चतम न्यायालय ने सन 2014 में मात्र सन्तानोत्पति में अक्षम, इस समुदाय को आरक्षण के साथ -साथ स्वतंत्रता और समानता का अधिकार देते हुए, समाज की मुख्य -धारा में स्वीकार कर।उनकी मानवीय अस्तित्व पर लगे प्रश्नचिन्ह को मिटा दिया।परन्तु उसके साथ ही यह भी अत्यंत आवश्यक है कि उनके बारे में समाज के चित्त में एक स्वीकार्यतापूर्ण

सकारात्मक बदलाव आना। जन्म के साथ ही इस वर्ग के लोगों को अपने परिवार व समाज से दूर अंजान लोगों के बीच छोड़ दिया या जाना पड़ता है।वहाँ इनके समक्ष सबसे बड़ी समस्या जीविकोपार्जन की होती है ।इनके पास जीविकोपार्जन का कोई आधार नहीं होता और न ही छोड़े गए माता–पिता द्वारा कोई सहयोग प्राप्त होता है। इनके लिए उपयुक्त शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था भी नहीं होती।पर फिर भी इन्हें परिवार या समाज से कोई शिकायत नहीं होती। साथ ही यह वर्ग चोरी – बेईमानी ,भ्रष्टाचार से धन उगाही में भी लिप्त नहीं पाए जातें।हाँलाकि चोरी ,हिंसा जैसे बुरे कार्यों से ये अपने को इसलिए भी दूर रखते हैं कि यह पाप की श्रेणी में आता है और किसी पापकर्म के द्वारा पुनः वे इसी हिजड़ा योनि में पुनर्जन्म नहीं लेना चाहते।ये लोग दूसरों की खुशियों में नाचते–गाते ,तालियां पीटते , ठनगन करते ,अपेक्षित राशि न मिलने पर अपनी दैहिक विकृति का प्रदर्शन कर अपना जीविकोपार्जन करते हैं। समाज इनके साथ मानवीय व्यवहार भले ही न करे पर ये उनके मांगलिक अवसरों पर अपना आशीष बरसाने अवश्य जाते हैं।समाज को भी कहीं न कहीं इनकी उपस्थित की आकांक्षा रहती है।

कैसी विडम्बना है कि एक ओर लैंगिक विकारों के कारण ही समाज इन्हें मुख्य –धारा से अपदस्त करता है और वहीं दूसरी ओर इसी समाज के कुछ लोग अपनी समलैंगिक काम–भावना को शांत करने के लिए चन्द पैसों के लिए इन आर्थिक रूप से अभावग्रस्त और विवश लोगों की लैंगिक विकृतियों के बावजूद शारीरिक शोषण भी करते हैं।अंततः लेखिका लिखती हैं कि लैंगिक विकृति से युक्त बच्चे की माता–पिता को चाहिए की ऐसे बच्चे के जन्म पर कुंठित न हों बल्कि उसे विशेष प्यार दे ,अपनी देख रेख में आत्मनिर्भर बनायें।यह प्रकति का एक क्रूर मजाक है।उसमें उस बच्चे या माता–पिता का कोई दोष नहीं।अतः उनके संघर्ष में साथ दे ,परिवार और समाज को उनका सहयोग करते हुए ,उन्हें मुख्य–धारा में शामिल करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

माधव जी ने हिजड़ो में गुरु शिष्य परंपरा और अनुशासन को रेखांकित की हैं कि हिजड़ो की समुदाय में गुरु– शिष्य परंपरा की एक मजबूत कड़ी चलती रही है। गुरु के प्रति निष्ठा, इमानदारी बहुत अधिक रहती है और उनके निर्णय पर किसी प्रकार का विरोध नहीं किया जा सकता और न ही कोई प्रश्न उठाया जा

सकता है। गुरु भी अपने चेलों की हर आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही निर्णय लेते हैं और कहीं भी निर्णय थोपने जैसा कार्य नहीं करते ।अपने चेलों के बीज सलाह मशविरा करके ही कोई निर्णय लेते या देते हैं। माँ या अभिभावक की भूमिका में गुरु पूरे हिजड़ा समुदाय के बीज एक अनुशासन बनाए रखते हैं ।जिसमें आपसी समझ अधिक और कड़ाई कम होती।

इस वर्ग की अंतिम संस्कार के विषय में लेखिका कुछ स्पष्टतः नहीं लिखीं हैं।भ्रामक तथ्यों का ही सहारा लीं हैं।लेखिका इस वर्ग से साक्षात्कार को साझा करती हुईं लिखती हैं कि इस वर्ग से संवेदना पर प्रश्न से जवाब मिलता हैं– कि वो तो खुद ही डरते हैं कि कहीं हमसे किसी का दिल ना दुखी हो जाए ।एक चींटी भी पैर के नीचे पड़ जाती है तो सोचते हैं, हाय राम, इसके अंडे होंगे, बच्चे होंगे। पुनः धर्म पर प्रश्न से जवाब मिलता है–"राम भी वही, रहीम भी वही ।जाना भी एक बात है, आना भी एक। कोई हिंदू बच्चा जनेऊ पहनकर तो पैदा नहीं होता।उसे बाद में जनेऊ पहनाकर हिन्दू बनाया जाता है। वैसे ही कोई मुसलमान बच्चा खतना करवाकर तो पैदा नहीं होता। यहीं धरती पर आने के बाद ही उसका खतना करवाकर मुसलमान बनातें हैं।ये तो हम लोग की भावना है कि यह मेरा अल्ला है, यह उसका गॉड है।सभी धर्मों के लोगों का थोड़ा–थोड़ा खून इकट्ठा करिए। उसे देखकर कोई साइंस या डॉक्टर बता दे कि हिंदू का खून है और यह मुसलमान का तो हम अपना नाम ही बदल देंगे।"

समुदाय के एक व्यक्ति से जब राष्ट्रभक्ति के विषय में पूछा जाता है तो पूरे उत्साह के साथ उसका जवाब रहा– "घर को फुट ,जगत को लूट। जब हम लोग घर में ही लड़ेंगे तो बाहर के आदमी हमारा सत्यनाथ तो कर ही देंगे ।चाहे हिंदू हो, मुसलमान हो ,सिख हो, इसाई हो या हम लोगों की जाति हिजड़ा संघ का ही क्यों न हो ।हम लोग भी हिंदुस्तान में ही रहते हैं। कोई बाहर के तो है नहीं। तब मेरे कहने का मतलब यही कि यदि सब लोग मिलकर रहें ,तो एक मुट्ठी बन जायेगा।कोई हिला नहीं सकता।"

वह एक उदाहरण देकर समझाती है कि "यदि चौकी का एक गोड़ा टूट जाएगा तो क्या आप सीधा बैठ सकेंगे? नहीं न इसीलिए हम लोगों का चारों खम्भा मजबूत होना चाहिए।अतः राष्ट्र की किसी समस्या को यह भी उतनी ही

गहराई से महसूस करते हैं जितना हम, आप।आवश्यकता है कि इनके लिए समाज में एक सकारात्मक भावना का विकास किया जाए। स्वयं हिजड़ा समुदाय को भी इसमें आगे आना होगा।केवल सरकार या कानून के भरोसे विकास संभव नहीं।

निष्कर्षतः लेखिका हिजड़ो को किन्नर न कहनें की पुरजोर कोशिश की हैं। पर लोगों का हिजड़ो को किन्नर कहने के पीछे शायद उनकी इस वर्ग के प्रति सहानुभूति की एक पहल रही है।साथ ही उन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से यह अहसास कराने का प्रयास किया है कि प्रकृति का मारा यह समुदाय जन्म से दुःख का भागी बन जाता है।जन्म लेते ही माता–पिता के नजरों से अपमानित हो उनके प्रेम का अछूता रह जाता है।और यहीं से उनके दुःख ,पीड़ा व नारकीय जीवन के दिन शुरू होतें हैं।और कोई उन्हें उनके पूरे जीवन काल में सम्मान की नजरों से नहीं देखता।मानव जीवन पा कर भी पशुनिरा हो जाता है।इस लोक में खाने गाने–बजाने से ज्यादा कुछ रचनात्मक नहीं कर पातें, अपमानित होते ,संघर्ष करते इस लोक से विदा हो जातें हैं।उनके संघर्षों का कोई मूल्य नहीं रह जाता।यदि अभी से भी प्रकृति के मारे इन लोगों को हम अपने दिव्यांग भाइयों– बहनों जैसे ही समझें तो इनका मानव जीवन शायद सफल हो जाये।

शोध छात्र,
सर्वेश यादव

हिंदीविभाग,ई.वि.वि.,प्रयागराज,उ.प्र.,211002